गेहूँ उत्पादन की उन्नत तकनीक

गेहूँ की खेती सिंचित और सीमित सिंचाई दोनों ही स्थितियों में की जा सकती है। यदि किसान भाई अच्छी गुणवत्ता वाला उन्नत बीज समय से सिंचाई तथा खाद व उर्वरकों की संतुलित मात्राओं का उपयोग करें, तो गेहूँ का अधिकतम उत्पादन प्राप्त कर सकते है।

बीज की मात्रा : 40 किलोग्राम प्रति एकड़ उपयोग करें, देर से बुआई की स्थिति में बीज की मात्रा 45–50 किलोग्राम प्रति एकड़ रखें।

बीजोपचार : बोने के पूर्व थायरम नामक दवा की 2.5 से 3 ग्राम मात्रा प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचारित करके बोयें।

उर्वरक की मात्रा : उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण सिंचाई की उपलब्धता, बोई गई प्रजाति के आधार पर करना चाहिए। सामान्य तौर पर औसत भूमि में उर्वरक तत्वों की मात्रा निम्नानुसार रखें :–

उर्वरक तालिका :–

परिस्थिति	उर्वरक की मात्रा किलोग्राम प्रति एकड़		
	नत्रजन	स्फुर	पोटाश
सिंचित समय पर बुआई	50–60	20	8
सिंचित पढ़ेती बुआई	30–40	20	6
अर्धसिंचित	20–25	10	6

रासायनिक उर्वरकों की उपयोग विधि : देशी गेहूँ (शरबती)में स्फुर एवं पोटाश की मात्रा तथा नत्रजन की आधी मात्रा बुआई के समय तथा शेष आधी नत्रजन पहली सिंचाई के बाद दूसरे दिन खड़ी फसल में छिड़क देवें। यदि बौनी किस्म का गेहूँ बोया गया हो तो स्फुर व पोटाश की पूरी मात्रा व नत्रजन की आधी मात्रा एक साथ बोआई के समय व शेष नत्रजन की आधी मात्रा एक साथ बेआई के समय वा शेष नत्रजन में क्रमशः प्रथम व व्दितीय सिंचाई के बाद देवें।

उपर्युक्त प्रजातियां :–

अर्ध सिंचित दशा के लिए जातियां – सुजाता, सी–306, एच.डब्ल्यू–2004, जे.डब्ल्यू–17

सिंचित दशा के लि**ए** : डब्ल्यू एच.–147, जी डब्ल्यू–190,जी डब्ल्यू–273, डी.एल.–803–3, लोक–1, जी. डब्ल्यू–322

बुआई का तरीका : कतार से कतार की दूरी निम्न प्रकार से रखें :

सिंचित अवस्था में समय पर बुआई में 20 से 25 सेमी. (9 इंच), असिंचित अवस्था में समय पर बुआई में 20 से 25 सेमी. (10 इंच) तथा बौनी प्रजातियों की बुआई 5 सेमी. से अधिक गहराई पर नही करना चाहिए।

सिंचाई एवं जल प्रबंध : सिंचाई जल की उपलब्धता के अनुसार सिंचाई का निर्धारण निम्न प्रकार से करें :–

उपलब्ध सिंचाईयों की संख्या	सिंचाई करने की अवस्था
एक सिंचाई उपलब्ध होने पर	ताज (किरीट) जड़े निकलने के समय बोआई के 20 से 25 दिनों बाद
दो सिंचाई उपलब्ध होने पर	पहला किरीट जड़े निकलते समय दूसरा कल्ले निकलते समय
तीन सिंचाई	पहला किरीट जड़े निकलते समय दूसरा कल्ले निकलते समय, तीसरा दानों में दूध बनते समय
चार सिंचाई	किरीट जड़े निकलते समय, कल्ले निकलते समय फूलने के समय व दुग्धावस्था में
पॉच सिंचाई	किरीट जड़े निकलते समय, कल्ले निकलते समय, तनों में गांठ बनते समय, फूलने के समय व दानों में दूध बनतें समय
छः सिंचाई उपलब्ध होने पर	किरीट जड़े निकलते समय, कल्ले निकलते समय, तनों में गांठ बनते समय, दानों के भरने की अवस्था में

नींदा (खरपतवार) नियंत्रण :– खरपतवार के नियंत्रण के लिए निंदाई व फसल चक्र अपनाना चाहिए इसके अतिरिक्त निम्न रसायनों का उपयोग कर सकते है।

रसायन का नाम	मात्रा प्रति एकड़	छिड़काव का समय	किन खरपतवारों के लिए
2,4 डी को सोडियम लवण	400 मिली.	गेहूँ बुआई के 30–35 दिनों बाद	हिरणखुरी, बधुंआ व अन्य चौड़ी पत्ती वाले
आइसोप्रोट्रान	400 मिली.	फसल की बोआई के बाद व अंकुरण के पूर्व	चिरैया, बाजरा व अन्य सकरी पत्ती वाले
2,4 डी तथा आइसोप्रोट्रान का आधा–आधा भाग	400 मिली.	फसल बोआई के 30–35 दिनों बाद	सभी प्रकार के चौड़ी व सकरी पत्तियों वाले के लिए

वि□ोश : गेहूँ के साथ अन्य ुससलें जैसे चना, सरसों या मसूर होने पर पेन्डिमेथ्लीन दवा 400 से 500 मिली. प्रति एकड़ फसल की बुआई के बाद तथा अंकुरण पूर्व प्रयोग करें।

रोग नियंत्रण : बीज सड़न तथा उकठा – इसकी रोकथाम के लिए थायरम नामक दवा की 2.5 से 3 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करके बोवें।

कंडवा : इसकी रोकथाम के लिए बीजों को वीटावेक्स 2.5 ग्राम दवा प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोवें। यदि रोगग्रस्त पौधे खेत में दिखाई दें तो उसें उखाड़कर जला देना चाहिए।

गेरुआ : इसकी रोकथाम के लिए जिनेब दवा 1 किलो ग्राम प्रति एकड़ की दर से जुताई करते समय खेत में डाले।

चूहा नियंत्रण : खेत में खड़ी फसल में हानि पहुॅचाते है। चूहो की राकथाम के लिए पहले गेहूँ के दानों को भिगोकर चूहों के बिल के पास रखें। उसके बाद गीले गेहूँ दानों पर खाने वाले तेल की परत लगाकर जिंक फास्फाइड भुरक दे इन गेहूँ के दानों को चूहों के बिलों के पास बिखेर दें।